नवभारत
भोपाल, रविवार, 16 नवंबर 2025
07

राहु केतु

जीवन की अदृश्य शक्तियों का प्रतिनिधित्व

ज्योतिषाचार्य
तेजस्कर पाण्डेय

वास्तविकता यह है कि राहु-केतु जीवन की उन अदृश्य शक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिन्हें समझना अत्यंत आवश्यक है—इच्छाओं का उभरना और उनका प्रभाव, आन्तरिक अनुभूति, पूर्वजन्म संस्कार, कर्मफल, आध्यात्मिक मार्ग, आकर्षण और त्याग—ये सभी जीवन के वे आयाम हैं जिन्हें किसी भी समाज में हर व्यक्ति अनुभव करता है. राहु-केतु इसका वैज्ञानिक, खगोलीय और मनोवैज्ञानिक प्रतिनिधित्व हैं.

भारतीय ज्योतिष के अनेक आयामों में राहु और केतु का स्थान अत्यंत विशिष्ट और जटिल है. इन्हें छाया-ग्रह कहा गया है, क्योंकि खगोलशास्त्रीय दृष्टिकोण से ये किसी प्रकार के ठोस या दृश्य पिण्ड नहीं हैं. यह तथ्य प्रारम्भ में ही स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि राहु और केतु की कोई भौतिक देह नहीं है, न इनका कोई आकार-प्रकार है और न ही ये सूर्य की तरह दैदीप्यमान या मंगल की तरह भू-आकृतिक विशेषताओं वाले ग्रह हैं. इनका अस्तित्व पूरी तरह गणितीय है—सूर्य के आभासी पथ (क्रान्तिवृत्त) और चन्द्रमा की पृथ्वी-परिक्रमा मार्ग का जो प्रतिच्छेद होता है, वही दो बिन्दु राहु और केतु के रूप में जाने जाते हैं. यह प्रतिच्छेदन चन्द्र-पथ का वह स्थान है जहाँ से चन्द्रमा सूर्य के पथ को उत्तर—अर्थात ऊपर—की ओर काटता है, और यही बिन्दु राहु कहलाता है; तथा जहाँ चन्द्रमा सूर्य-पथ को दक्षिण—अर्थात नीचे—की ओर काटता है, वही बिन्दु केतु कहलाता है. इन दोनों की स्थिति सदैव एक दूसरे के ठीक विपरीत होती है—180 डिग्री के अंतर पर. यही स्थिति इन्हें कुंडली में अत्यंत निर्णायक बनाती है, क्योंकि यह जीवन के दो ध्रुवों—आकर्षण और विमुक्ति—का प्रतिनिधित्व करते हैं.

खगोलशास्त्र की दृष्टि से इन नोड्स का महत्व इसलिए भी अत्यन्त है कि सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण केवल इन्हीं दो नोड्स के आसपास सम्भव होते हैं. अत: वैज्ञानिक दृष्टि कहती है कि राहु-केतु ग्रहण-निर्माण की खगोलीय यांत्रिकी को समझने के सर्वोत्तम संकेतक हैं. भारतीय ज्योतिष के प्राचीन आचार्यों ने इन बिन्दुओं के इसी अद्भुत व्यावहारिक महत्त्व को देखते हुए इन्हें ग्रह-परिवार में स्थान दिया, यद्यपि उन्होंने यह कभी नहीं कहा कि ये भौतिक रूप से ग्रह हैं. बृहद्पाराशर होरा शास्त्र में स्पष्ट उल्लेख मिलता है कि राहु-केतु छाया ग्रह हैं, और ये ग्रहण-योग में सक्रिय रहते हैं. यह प्रतीकात्मक भाषा उनकी वैज्ञानिक समझ को भी प्रकट करती है और उनकी दार्शनिक व्याख्या को भी.

मिथकीय दृष्टि से देखें तो राहु-केतु की कल्पना मानव-मन के भय, आश्चर्य और नैसर्गिक जिज्ञासा का साकार रूप है. समुद्र-मंथन की पुराणकथा में राहु को अमरत्व प्राप्त होने के बाद देवताओं द्वारा दंडित किया गया—उसका सिर देवताओं ने काट दिया और उसका धड़ केतु में परिणत हुआ. यह कथा वस्तुत: मानव के उस मानसिक संघर्ष का रूपक है जिसमें आकांक्षा और त्याग, भौतिक लिप्सा और आध्यात्मिक अनुभूति, दोनों सह-अस्तित्व रखते हैं. राहु का सिर कर्म-बंध और इच्छाओं का प्रतीक है; वहीं केतु का धड़ ज्ञान और विमुक्ति का प्रतीक. पुराणों की कथाएँ वैज्ञानिक तथ्य नहीं बतातीं, परंतु वे गहन मनोवैज्ञानिक सत्य और सामाजिक धारणाओं का रूपक अवश्य प्रस्तुत करती हैं. यही कारण है कि भारतीय समाज में राहु-केतु के प्रति एक प्रकार का रहस्यमय भाव रहा है—मिश्रित भय, आकर्षण, आशंका और श्रद्धा का एक अनूठा मिश्रण.

यदि ज्योतिषीय महत्व की बात की जाए, तो राहु-केतु को 'छाया' इसलिए कहा जाता है क्योंकि ये मानव-जीवन के उन पक्षों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो प्रत्यक्ष नहीं होते—जैसे अनियंत्रित आकांक्षा, अवचेतन वासनाएँ, अनजाने भय, कल्पना, भ्रम, पिछले जन्म के संस्कार, अनजानी दिशाएँ और अदृश्य प्रेरणाएँ. राहु व्यक्ति को बाहरी संसार की ओर, महत्वाकांक्षा, राजनीति, सामाजिक प्रतिष्ठा, तकनीकी उन्नति, विदेशी वातावरण और भौतिक सफलता की ओर प्रेरित करता है. यह वह शक्ति है जो व्यक्ति को सतत सक्रिय, उद्यमी और असंतुष्ट बनाए रखती है—असंतुष्ट इसलिए कि राहु की प्रकृति ही अनन्त चाहतों से भरी है. वहीं केतु का प्रभाव व्यक्ति को आन्तरिक दुनिया की ओर ले जाता है—वैराग्य, तप, प्रज्ञा, बोध, मोक्ष, आध्यात्मिक अनुभूति और ज्ञान का मार्ग. केतु वह शक्ति है जो बिना किसी आकर्षण के भीतर से सत्य की ओर ले जाती है. इस प्रकार राहु और केतु मानव जीवन की दो विपरीत ध्रुवीय शक्तियाँ हैं—राहु संसार का आकर्षण, केतु उस आकर्षण से निकलकर आत्म-अनुभूति का मार्ग.

इस प्रकार चाहे मनोवैज्ञानिक दृष्टि लें, समाजशास्त्रीय दृष्टि लें या दार्शनिक—ये दोनों नोड्स जीवन के दो अनन्त पक्षों का प्रतिनिधित्व करते हैं. इच्छा और त्याग, भोग और योग, बंधन और मोक्ष, माया और ज्ञान—ये सभी द्वंद्व राहु-केतु के प्रतीकात्मक अर्थ में समाहित हैं. इसीलिए सभी प्राचीन ग्रंथ इन्हें अत्यंत प्रभावशाली मानते हैं.

जन्मकुंडली में राहु-केतु की दशा और गोचर का महत्व भविष्यवाणी में अत्यंत निर्णायक माना जाता है. राहु की दशा में व्यक्ति के जीवन में अचानक परिवर्तन, अप्रत्याशित अवसर, समाज में प्रतिष्ठा, विवाद, न्यायालयीन प्रक्रियाएँ, विदेश-यात्राएँ, राजनीतिक उतार-चढ़ाव, ऊँचे पदों की प्राप्ति या अचानक नुकसान—सभी संभव है. यह दशा व्यक्ति को अत्यंत सक्रिय और महत्वाकांक्षी बनाती है. यदि राहु शुभ ग्रहों के साथ स्थित हो तो यह व्यक्ति को असाधारण सफलता देता है, लेकिन यदि यह पाप प्रभावों से राहु दूषित हो, तो भ्रम, धोखा, अतृप्ति, अस्थिरता और मानसिक तनाव उत्पन्न हो सकता है.

केतु की दशा इसके विपरीत गहन आन्तरिक परिवर्तन का समय माना गया है. यह व्यक्ति को आत्मनिवेदन और आत्मचिंतन की ओर ले जाती है. यह दशा कभी-कभी अचानक होने वाले त्याग, नौकरी छोड़ना, गृहस्थी से वैराग्य, अनपेक्षित नुकसानों से उत्पन्न बोध, आध्यात्मिक जागरण, ध्यान-योग की ओर झुकाव, गुरु-प्राप्ति या शोध में गहरी रुचि उत्पन्न कर देती है. केतु की दशा बाह्य उन्नति की नहीं, बल्कि आन्तरिक उन्नति की दशा है. यह दशा मन को गहरे स्तर पर बदल देती है—व्यक्ति को अपनी सीमाएँ दिखाती है और फिर अनुभव का दान देती है. ज्योतिष का गहरा सत्य यह है कि राहु-केतु जैसी शक्तियाँ व्यक्ति को भयभीत करने के लिए नहीं, बल्कि उसके जीवन के स्वाभाविक मनोवैज्ञानिक प्रवाह को समझाने के लिए हैं. ये किसी दैवी दण्ड के प्रतीक नहीं हैं, बल्कि जीवन की गहन संरचनाओं की ओर संकेतक हैं.

प्रतिपदा तिथि पर करें चंद्रदेव की पूजा

हिंदू धर्म में चंद्रमा को मन और भावनाओं का कारक माना जाता है. चंद्र देव न केवल नवग्रहों में एक प्रमुख ग्रह हैं, बल्कि मानसिक संतुलन, शांति, सौभाग्य और कल्याण के प्रतीक भी हैं. अमावस्या के बाद आने वाली प्रतिपदा तिथि को चंद्र दर्शन का अत्यंत शुभ अवसर माना गया है. यह वह दिन होता है जब भक्त चंद्रमा के प्रथम दर्शन करते हैं और चंद्र देव की पूजा करके उनके आशीर्वाद की कामना करते हैं. वर्ष 2025 में मार्गशीर्ष मास का चंद्र दर्शन 22 नवंबर, शनिवार को मनाया जाएगा, और इस दिन चंद्रमा के दर्शन का समय 05:08 बजे शाम से 06:25 बजे तक रहेगा.

मान्यता है कि चंद्र दर्शन के दिन चंद्रदेव की पूजा करने से मन शांत होता है, मानसिक विकारों से मुक्ति मिलती है और जीवन में सौभाग्य का आगमन होता है. यह तिथि उन लोगों के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है जिनकी कुंडली में चंद्रमा कमजोर या अशुभ स्थिति में हो. इस दिन व्रत रखना, चंद्रदेव को अर्घ्य देना, खीर का नैवेद्य चढ़ाना और दान करना अत्यंत फलदायी माना गया है. ऐसे में चंद्र दर्शन न केवल धार्मिक दृष्टि से पवित्र है बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक लाभ देने वाला भी है.

चंद्र दर्शन के दिन कई शुभ मुहूर्त भी रहते हैं जैसे ब्रह्म मुहूर्त, अभिजीत, विजय और गोधूलि मुहूर्त. इन कालों में पूजा और दान करने का फल अनेक गुना बढ़ जाता है. विशेष रूप से भूमध्यरेखा पर चंद्रमा का प्रभाव मन, बुद्धि और भावनाओं को संचालित करता है, इसलिए इसे पूजा के लिए शुभ माना गया है. जिन लोगों के जीवन में मानसिक तनाव, अस्थिरता, निर्णय लेने में कठिनाई या पारिवारिक कलह रहती है, उन्हें चंद्र दर्शन के दिन अवश्य व्रत और पूजा करनी चाहिए.

पूजा विधि के अनुसार सुबह स्नान करके संकल्प लेने के बाद शाम को चंद्र देव को अर्घ्य दिया जाता है. इसके बाद चावल, शक्कर, खीर, सफेद पुष्प, रोली और चांदी का सिक्का चढ़ाया जाता है. मंत्र– क्षीरपुत्राय विद्महे अमृत तत्वाय धीमहि, तन्नो चन्द्र: का जाप अत्यंत शुभ माना गया है. व्रतधारी इस दिन फलाहार करते हैं और चंद्र दर्शन के बाद ही पारण करते हैं.

शिव चतुर्दशी का व्रत

सुख, समृद्धि और मोक्ष का मार्ग

हिंदू धर्म में भगवान शिव की उपासना अद्वितीय मानी गई है, और मासिक शिव चतुर्दशी का व्रत इसी भक्ति का एक विशेष, पावन और अत्यंत फलदायी रूप है. हर महीने कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को आने वाली यह शिव चतुर्दशी साधकों को मन, कर्म और वचन से भगवान शिव के नजदीक ले जाती है. मान्यता है कि इस दिन विधिपूर्वक किया गया व्रत और रात्रि पूजन साधक के जीवन से दुख, भय, रोग, पाप तथा बाधाओं का पूर्णत: नाश कर देता है. यह व्रत न केवल मनोकामनाओं की पूर्ति करता है, बल्कि जीवन में सुख, शांति और समृद्धि भी बढ़ाता है.

शिव चतुर्दशी की रात को जागरण करना अत्यंत शुभ माना गया है, क्योंकि इसी रात्रि में साधक का तप भगवान शिव तक सीधा पहुँचता है. पंचाक्षरी मंत्र – '? नम: शिवाय' – का जाप व्यक्ति के भीतर छिपी सकारात्मक ऊर्जा को उजागर करता है और मन को असीम शांति देता है. अभिषेक में किए गए जल, दूध, घी और शहद का अर्पण शिवभक्त की भक्ति को पूर्णता प्रदान करता है. इस व्रत को पूरे श्रद्धा से करने वाला साधक पुण्य, आयु, आरोग्य, संतान, विद्या और ऐश्वर्य से परिपूर्ण होकर अंत में शिवलोक तक पहुँचना अपना सौभाग्य समझता है. शिव चतुर्दशी व्रत का महत्व हिंदू शास्त्रों और पुराणों में अत्यंत व्यापक रूप से वर्णित है. धार्मिक मान्यता के अनुसार कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि स्वयं भगवान शिव को समर्पित होती है. इस दिन शिव के दिव्य ज्योतिर्लिंग का प्राकट्य हुआ था, इसलिए यह तिथि शिव साधना के लिए अत्यंत शुभ और सिद्ध मानी जाती है.

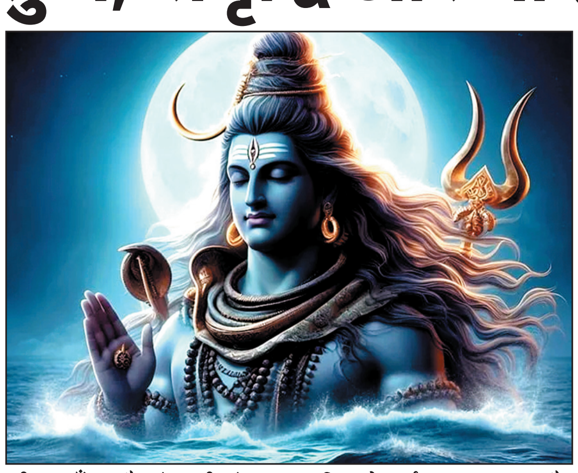

इस पावन व्रत में दिनभर निराहार रहकर मन, वचन और कर्म से पवित्रता धारण की जाती है. सन्ध्या के समय शिवलिंग का पंचामृत से अभिषेक किया जाता है—जिसमें गंगाजल, दूध, दही, घी और शहद का प्रयोग होता है. पूजा में बेलपत्र, दूब, कुशा, धतूरा, भांग, इत्र, पुष्प और श्रंगार सामग्री का अर्पण विशेष माना गया है. शिव परिवार शिव, पार्वती, गणेश, कार्तिकेय और नंदी सभी को साथ में पूजने से यह व्रत पूर्णता को प्राप्त होता है.

मार्गशीर्ष अमावस्या : कब करें स्नान-दान और तर्पण

मार्गशीर्ष माह की अमावस्या हिंदू पंचांग में अत्यंत शुभ और पुण्यदायिनी मानी जाती है. इसे अगहन अमावस्या भी कहा जाता है, और धार्मिक रूप से यह दिन विशेष रूप से स्नान-दान, पितृ तर्पण और देवी-देवताओं की आराधना के लिए सर्वोत्तम माना जाता है. वर्ष 2025 में यह तिथि दो दिनों में पड़ रही है, जिससे भक्तों के मन में भ्रम की स्थिति बन गई है कि आखिर सही अमावस्या किस दिन मनाई जाए. पंचांग और ज्योतिष शास्त्र स्पष्ट रूप से कहते हैं कि उदयातिथि को मुख्य माना जाता है. इसी कारण 20 नवंबर, गुरुवार को मुख्य मार्गशीर्ष अमावस्या मानी जाएगी. हालांकि 19 नवंबर को दर्श अमावस्या भी है, जो पितरों के कार्यों के लिए विशेष फलदायी होती है.

इस अमावस्या का महत्व इसलिए और बढ़ जाता है क्योंकि यह तिथि भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की विशेष आराधना का दिन है. लोकमान्यता है कि इस दिन पवित्र नदियों में स्नान करने से न केवल पुण्य की प्राप्ति होती है बल्कि जीवन के कष्ट भी दूर होते हैं. वहीं दान-पुण्य करने से मनुष्य के पापों का क्षय होता है और घर में सुख-समृद्धि का वास होता है. यही कारण है कि भक्त बड़ी श्रद्धा के साथ इस तिथि का इंतजार करते हैं और इसे अत्यंत पावन समय मानते हैं. इस दिन सूर्योदय के समय अमावस्या तिथि होने से स्नान-दान और पितृ कार्य करना अत्यंत शुभ फलदायी रहेगा.

20 नवंबर की भोर में ब्रह्म मुहूर्त 5-01 से 5:54 तक रहेगा, जो नदी स्नान और पुण्य कर्म के लिए सर्वश्रेष्ठ माना गया है. पंचांग के अनुसार, इस दिन सर्वार्थ सिद्धि योग भी बनेगा, जो सुबह 10-58 से अगले दिन 6-49 बजे तक रहेगा. यही नहीं, दिन के मध्य में अभिजीत मुहूर्त—11-45 से 12-28 तक—दान-पुण्य और लक्ष्मी पूजा के लिए आदर्श समय माना गया है.

वास्तु शास्त्र के अनुसार पांच सबसे शुभ पत्ते

जिस प्रकार पौधे वातावरण को शुद्ध करते हैं, उसी प्रकार कुछ पत्ते हमारे घर और जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करते हैं. धार्मिक मान्यताओं और वास्तु सिद्धांतों के अनुसार कुछ विशेष पत्तों को अत्यंत शुभ माना गया है. ये न केवल पूजा-पाठ में प्रयोग होते हैं, बल्कि नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर सौभाग्य और सुख-समृद्धि भी लाते हैं.

वास्तु शास्त्र में पौधों और पत्तों का विशेष महत्व माना गया है. जिस प्रकार पौधे वातावरण को शुद्ध करते हैं, उसी प्रकार कुछ पत्ते हमारे घर और जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करते हैं. धार्मिक मान्यताओं और वास्तु सिद्धांतों के अनुसार कुछ विशेष पत्तों को अत्यंत शुभ माना गया है. ये न केवल पूजा-पाठ में प्रयोग होते हैं, बल्कि नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर सौभाग्य और सुख-समृद्धि भी लाते हैं. आइए जानते हैं वास्तु शास्त्र के अनुसार पाँच ऐसे पवित्र और शुभ पत्तों के बारे में—

आम का पत्ता– आम के पत्ते को सबसे शुभ माना गया है. किसी भी पूजा, हवन या गृह प्रवेश के समय कलश के मुख पर आम के पाँच या सात पत्ते लगाए जाते हैं. ऐसा करने से वातावरण पवित्र होता है और नकारात्मक ऊर्जा घर में प्रवेश नहीं करती. आम के पत्ते को देवी-देवताओं का प्रिय माना गया है, इसलिए यह धार्मिक कार्यों में अनिवार्य है. वास्तु के अनुसार इसे घर के प्रवेश द्वार पर तोरण के रूप में लगाने से लक्ष्मी का वास होता है और बुरी शक्तियाँ घर से दूर रहती हैं.

पीपल का पत्ता– पीपल का वृक्ष स्वयं भगवान विष्णु का प्रतीक माना गया है. इसके पत्तों से पूजा करने से पाप नष्ट होते हैं और व्यक्ति को लंबी आयु का आशीर्वाद मिलता है. वास्तु के अनुसार घर के पास पीपल का पौधा नकारात्मक ऊर्जा को दूर करता है और आसपास का वातावरण सकारात्मक बनाता है. शनिदेव की कृपा पाने के लिए शनिवार के दिन पीपल के पेड़ की पूजा करना अत्यंत लाभदायक होता है.

तुलसी का पत्ता– तुलसी हिंदू धर्म में सबसे पवित्र मानी जाती है. इसे माँ लक्ष्मी का स्वरूप और भगवान विष्णु की प्रिय मानी जाती हैं. हर घर में तुलसी का पौधा होना अत्यंत शुभ माना गया है. तुलसी के पत्तों से घर का वातावरण पवित्र रहता है, रोग और क्लेश दूर होते हैं, और धन की देवी लक्ष्मी की कृपा बनी रहती है. वास्तु के अनुसार तुलसी को उत्तर या पूर्व दिशा में लगाने से विशेष फल मिलता है.

4 बेल का पत्ता– बेल के पत्ते भगवान शिव को अति प्रिय हैं. तीन पत्तों वाला बेलपत्र त्रिदेव — ब्रह्मा, विष्णु और महेश — का प्रतीक है. शिव पूजा में बिना बेलपत्र के अभिषेक अधूरा माना जाता है. वास्तु के अनुसार बेल का पेड़ घर के आसपास हो तो नकारात्मक ऊर्जा समाप्त होती है और परिवार में सुख-शांति बनी रहती है. यह पत्ता मानसिक शांति और आत्मबल भी प्रदान करता है.

अशोक का पत्ता

अशोक का अर्थ होता है — शोक को दूर करने वाला .इस वृक्ष के पत्ते घर की नकारात्मक शक्तियों को नष्ट करते हैं और सकारात्मक ऊर्जा लाते हैं. गृह प्रवेश, शादी या किसी मांगलिक कार्य में अशोक के पत्तों का प्रयोग शुभ फलदायक माना जाता है. वास्तु के अनुसार घर में अशोक का पौधा लगाने से क्लेश, भय और रोगों का नाश होता है. इन पाँच पवित्र पत्तों का प्रयोग केवल धार्मिक दृष्टि से ही नहीं बल्कि वास्तु की दृष्टि से भी अत्यंत लाभकारी है. ये घर में सुख, शांति, स्वास्थ्य और समृद्धि के वाहक होते हैं. यदि इनका सही दिशा में प्रयोग किया जाए, तो जीवन में सौभाग्य और सफलता के द्वार खुल जाते हैं.

राशिफल

दिनांक- 16 से 22 नवम्बर 2025 तक

ज्योतिषाचार्य पंडित
प्रियंका नारायणशंकर व्यास,
कोतवाली बाजार,
जबलपुर मो.नं.
098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति– इस सप्ताह सूर्य तुला राशि में, ता. 16 को 1.59 रात से वृश्चिक राशि में, मंगल वृश्चिक राशि में, वक्री बुध वृश्चिक राशि में, वक्री गुरू कर्क राशि में, शुक्र तुला राशि में, वक्री शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा कन्या तुला वृश्चिक और धनु राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव:- 16 को सूर्य वृश्चिक राशि में आयेगा और मंगल से मेल करेगा, गुरू के साथ नवम पंचम योग बनेगा जिसके प्रभाव से रूई, तांबा, चांदी, सोना, जौ, चना, दालवाना, उन, घी, तेल, मिर्च, गुड़, खाड़ में तेजी होगी यह तेजी उश्रम मध्यम रूप से चलेगी.

पर्व-व्रत-त्यौहार :

सोमवार	17 नवम्बर को	सोम प्रदोष व्रत
मंगलवार	18 नवम्बर को	शिव चतुर्दशी व्रत
बुधवार	19 नवम्बर को	श्राद्ध अमावस्या
गुरूवार	20 नवम्बर को	स्नानदान अमावस्या
शुक्रवार	21नवम्बर को	चन्द्रदर्शन

मेष

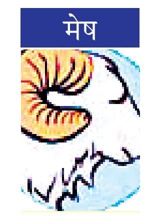

कार्यक्षेत्र में आपका प्रभाव बढ़ेगा, व्यवसाय के क्षेत्र में साझेदारों से थोड़ा तनाव सामने आ सकता है, जमीन जायजाद प्रापर्टी के क्षेत्र में खर्च होगा, उद्योग में नई कार्य योजना का विचार हो सकता है, अपनी इच्छापूर्ति के लिये आप कड़ी मेहनत करेंगे, जीवनसाथी और बच्चों के आपकी अपेक्षाओं के कारण कष्ट हो सकता है, राजकीय क्षेत्र में बेहतर सफलता की संभावना है.

वृषभ

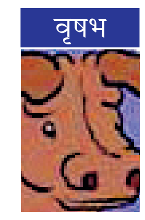

दोस्ती में गलतफहमी के चलते परेशानी महसूस कर सकते हैं, कार्य में आपकी अभिरूचि एवं मेहनत की झलक साफतौर पर दिखेगी, आप नए अनुबंधों में शामिल हो सकते हैं,किसी मित्र या साझेदार से लाभ होगा, जमीन जायजाद और उद्योग के क्षेत्र में आपको अड़चनों का सामना करना पड़ेगा,आप नये कार्य की शुरूआत कर सकते हैं.

मिथुन

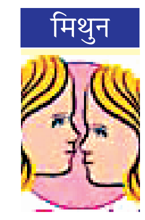

दूसरों की गलतियों की ढूढने की बजाय स्वयं में सुधार करने से लाभ होगा, पुराने दोस्तों से मुलाकात सुखद रहेगी,कार्य क्षेत्रमें वरिष्ठों की अपेक्षाओं का ध्यान रखें, यदि आप राजनीति में हैं, तो अच्छी सफलता मिलेगी, किसी करीबी मित्र की सलाह से आपको वित्तीय लाभ होगा, भावनात्मक संबंधों में आप उलझनों से बचें, स्वास्थ्य में आलस्य को और सुस्ती को त्यागें.

कर्क

परिवार में तनाव रहने से थोड़ी निराशा हो सकती है, छोटी मोटी बातों में दिमाग लगाने की बजाय माहौल को सामान्य बनाये रखें, कुछ बातें समय के साथ सुलझती जायेंगी, नये संपर्को से लाभ होगा, वाणी पर संयम रखें, आपकी बातों से किसी को तकलीफहो सकती है, सप्ताहान्त में अंतिम समयमांगलिक उत्सव पर विचार होगा, अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें.

सिंह

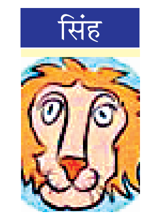

पारिवारिक हिसाब से यह सप्ताह महत्वपूर्ण रहेगा, परिवार को वक्त देकर आपको खुशी मिलेगी, घरेलू साज सज्जा में बदलाव का मन बनेगा, कार्यक्षेत्र में अपने हिसाब से व्यवस्था बनाने में सफल रहेंगे, वित्तीय दृष्टि से आप संतुष्ट रहेंगे, नये वाहन खरीदने का मन बना सकते हैं, पुरानी पहचान उपयोगी सिद्ध होगी, पुराना पैसा मिलने के योग हैं.

कन्या

खुद के कार्य और व्यवहार पर गंभीरता से ध्यान देना जरूरी है, कार्य की अधिकता से स्वास्थ्य पर ध्यान देना मुश्किल पड़ जायेगा, धार्मिक कार्यो में मन नहीं लगेगा, कारोबार के क्षेत्र में नई व्यस्तता एवं सफलता मिलेगी, आप इस वर्ष की उपलब्धि पर गर्व करेंगे, आपकी सामाजिक सक्रियता बढ़ेगी, आपकी सूझबूझ से मान सम्मान में वृद्धि होगी.

तुला

नई योजना बनाने सेपहले उसके हर पहलू पर अच्छी तरह से विचार कर लें, लाभ मिलेगा, कार्यक्षेत्र में समझौता वादी रवैया लाभदायक रहेगा, यदि आप किसी नई नौकरी के लिये प्रयासरत हैं, तो सप्ताह के उत्तरार्ध में सफलता मिलेगी, किसी करीबी मित्र से सुखद समाचार मिलेगा, जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें.

वृश्चिक

कार्यक्षेत्र में विस्तार के बेहतर अवसर मिल सकते हैं, भूमि भवन या वाहन क्रय की रूपरेखा बन सकती है, बुजुर्गो के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी, नई कार्ययोजना पर विचार होगा, नये कार्यक्षेत्र में पूंजी निवेश होगा, सामाजिक जीवन में आपकी लोकप्रियता बढ़ेगी, आपका स्वास्थ्य पहले से अपेक्षाकृत बेहतर रहेगा, मित्रों के साथ दूर दराज की यात्रा का संयोग बन सकता है.

धनु

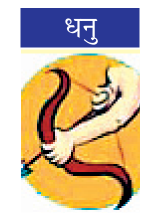

अपने घर परिवार संबंधी रिश्तेदारों का ध्यान रखें, अपनों के भाग्योदय से प्रसन्नता होगी, कार्य संबंधी समस्याओं के निपटारे का प्रयास लाभदायक रहेगा,दूसरों का सुखदुख बांटने के चक्कर में अपना स्वास्थ्य बिगाड़ सकते हैं, पुरानी परेशानियों से राहत मिलेगी, राजकीय क्षेत्र में सफलता मिलेगी, स्थाई संपत्ति के विस्तार की योजना बनेगी.

मकर

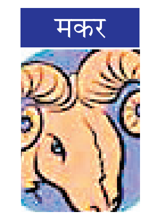

आर्थिक मामलों को पूरी तरह से नियंत्रित करने की कोशिश करेंगे, अपने रहन सहन और जीवन स्तर में कुछ सुधार की कोशिश रहेगी, परिवार के साथ छुट्टियों में घूमने का मन बना सकते हैं, कार्यक्षेत्र में आपके वरिष्ठ अधिकारी आपकी सराहना करेंगे, जमीन जायजाद प्रापर्टी के कार्यो में खर्च होगा, सामाजिक कार्यो मेंसफलता मिलेगी, गैर जरूरी कार्यो में धन खर्च होगा.

कुम्भ

घर पर आफिस की व्यवस्था को सुधारने की कोशिश करेंगे, अपनी योजनाओं को पूरा करने के लिये जरूरी धन की व्यवस्था कर लेंगे, आपके पास काफी मात्रा में धन आयेगा, कार्यक्षेत्र में सहकर्मियों के रवैये से असंतोष हो सकता है, पैतृक विवाद सामने आ सकता है, पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी सिद्ध होगी, परिश्रम अधिक करना पड़ेगा.

मीन

इस सप्ताह नये संपर्क भाग्योदय में सहायक होंगे, रिश्ते नातों के लिहाज से आपका समय बेहद शुभ है, अविवाहित विवाह बंधन में बंध सकते हैं, कार्यक्षेत्र में चल रही उलझनों से छुटकारा की संभावना है, जमीन जायजाद एवं परिवहन के लिये लाभ मिलेगा, किसी अनजान व्यक्ति से सुखद समाचार मिलेगा, सप्ताहान्त में पुराने रोग से कष्ट हो सकता है.